OM-24 - 2021 FILE_Page 1 and 2 04/03/2021 10:43 PM Page 10



# परमात्म-रंग में रंग जाने का त्योहार है 'होली'

ब्र.कु. अनुज, दिल्ली

एक सुगंधित पुष्प के पास जब हम खड़े होते हैं तो स्वतः ही खुशबू हमको मिलने लग जाती है। कहीं भी बगीचा हो फूलों का या फिर कोई सुगंधित वस्तु भी हो, उसके आस-पास जाने से हमें पता चल जाता है कि यहाँ कुछ अच्छा-सा तत्व है। संसार लोगों से बना है। और लोग जब आकर्षित होते हैं तो किस चीज़ से होते हैं? इत्र से या खुशबू से या सुगंध से। चाहे वो अलग-अलग प्रकार का हो लेकिन सब इससे ज़रूर प्रभावित होते हैं। लेकिन दुनिया में एक खुशबू बहुत मशहूर है, वो है पवित्रता के इत्र की खुशबू। और इसी पवित्रता के इत्र का यादगार है होली पर्व। इस पर्व पर एक-दूसरे को रंगों में रंगने की एक रीत चली आ रही है। और हर रंग कोई न कोई गुण, कोई न कोई विशेषता को इंगित करता है। इसका भक्ति में यादगार है भक्त प्रहलाद, जो परमात्मा का परम भक्त और पवित्र सोच वाला था। कहा जाता है कि उसकी बुआ का नाम होलिका था। और उनको एक वरदान प्राप्त था कि वो अग्नि में कभी जल नहीं सकती। लेकिन यथार्थ ये है कि उसने अपने वरदान का गलत इस्तेमाल किया और परमात्मा की याद में रहने वाले या परमात्मा को अपना सबकुछ मानने वाले प्रहलाद को जलाने के लिए वो उसे अग्नि में गोद में लेकर बैठ गई। होलिका जल गई लेकिन प्रहलाद को कुछ नहीं हुआ। तो इससे क्या सिद्ध होता है कि जो होली है, जो मन से सच्चा है, जो पवित्र है, जिसके अंदर सबके लिए सद्भावना, शुभभावना है, जो सबके लिए अच्छी सोच रखता है, उसको कोई भी, किसी भी तरह से क्षति नहीं पहुंचा सकता। अब इसको थोड़ा हम आध्यात्मिक पहलू से भी समझें तो कह सकते हैं कि इस समय भी जो पवित्र है, जिसकी सोच, जिसके संकल्प श्रेष्ठ हैं उसको इस दुनिया में भी कोई किसी भी तरह से क्षति नहीं पहुंचा सकता। इस ज्ञान को, इस समझ को डेवलप कर के हम ये समझ पाये कि वो पवित्रता जो धारण की हमने खुद में, उससे हमारी स्वतः रक्षा होती रहती है। इसी का भक्ति में यादगार दिखा दिया भक्त प्रहलाद का। तो आने वाले पर्व का यादगार सिर्फ रंगों में या रंगों से रंगने का नहीं है, बल्कि पुराने ईर्ष्या, द्वेष, नफरत के संस्कारों को अग्नि देकर, जलाकर अपने को होली बनाने का है। होली माना पवित्र बनना और फिर परमात्मा के रंग में पूरी तरह से रंग जाना ताकि आपको देखकर सभी को परमात्मा की याद आये। और इस यादगार को और बल मिले, जैसे भक्ति में एक गीत बना है, रंग दे चुनरियो..., ऐसा रंगो फिर रंग ना छूटे, धोबिया धोये चाहे सारी उमरिया। मतलब हमें देखकर सभी को उस परमात्मा की ही याद आये। इस गीत को जिसने भी बनाया होगा उसके भाव जो भी हों लेकिन हमें इसका भाव ये समझ में आता है कि आध्यात्मिक होना और पवित्र होना दोनों में अंतर है। क्योंकि जो आध्यात्मिक व्यक्ति है, उसके सामने चाहे कोई कैसा भी इंसान हो, चाहे दुश्मन ही क्यों न हो, वो उससे नफरत नहीं कर सकता। एक से प्रेम, एक से नफरत नहीं कर सकता। जब हम कहते कि हमें उसको देखकर अच्छा नहीं लगता और किसी को देखकर अच्छा लगता है तो इसका मतलब हम आध्यात्मिकता के सही अर्थ को अभी तक समझ ही नहीं पाये। अभी हम पूरी तरह से इसको अपना नहीं पाये हैं। जैसे-जैसे हमारे अंदर पवित्रता का बल जमा होता जायेगा, वैसे-वैसे स्वतः ही हमसे सारे रंग खुशी के, आनंद के, प्रेम के, सुख के सबको नज़र आयेंगे और सबमें हमको नज़र आयेंगे। ये है आध्यात्मिकता की पराकाष्ठा, हमारी पवित्रता की पराकाष्ठा, होली की पराकाष्ठा, परमात्मा के रंग में रंगने की पराकाष्ठा। इसका मिसाल कृष्ण का है, जिसे हर गोपी अपने साथ देखती है। मतलब उसकी पवित्रता इतनी गहराई से सबके अंदर समाई हुई है कि हर कोई उसको अपने साथ देखता है। ब्रह्माकुमारीज़ में हमको ये ज्ञान दिया जाता है कि 'बी होली बी राजयोगी।' 'योगी भव पवित्र भव।' इसका मतलब जो योगी और पवित्र दोनों है वो इस दुनिया में राजा भी है और ऋषि भी है। वो अपनी कर्मेन्द्रियों का राजा है और निरंतर अपने आप को परमात्मा के साथ लीन रखता है। इस तरह से अब समझ में आता है कि हम जब ये सारी मिसालें भूल गये, तो बस अब रंगों से खेल लेना, होली जला लेना और बस यहाँ तक अपने को सीमित कर दिया। जबकि हमें ये जानना और समझना ज़रूरी है कि ये त्योहार सिर्फ रंगों में रंगने का नहीं, बल्कि परमात्मा के रंग में रंगकर 'होली' बन जाने का त्योहार है। और ये इसी का यादगार है। तो आइये, हम भी सच्ची होली मनायें और परमात्मा के रंग में रंग जायें।

## उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

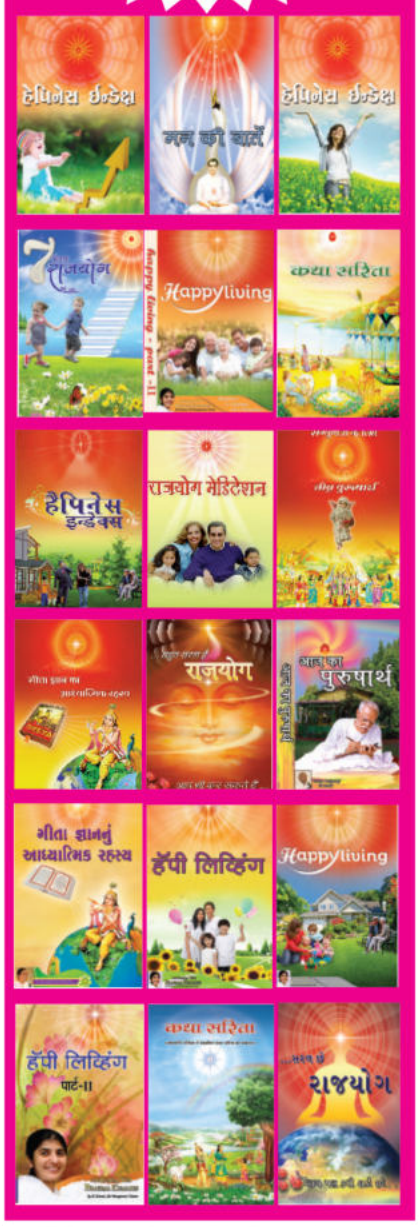


## मन की बातें
- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

**प्रश्न : मुझे छोटी-छोटी बातों में बहुत डर लगता है और मैं बहुत सोचने लगती हूँ। घर में अनेक समस्याएं आ रही हैं, मैं क्या करूँ?**

**उत्तर :** ये डर आजकल बहुत मनुष्यों में उत्पन्न हो रहा है। मनुष्य के जन्म-जन्म के विकर्म और विकार उसे डरा रहे हैं। मनुष्य ने अपनी आंतरिक शक्तियां भी बहुत नष्ट कर दी हैं। इसलिए वह कमज़ोर भी बहुत हो गया है। आप सवेरे आँख खुलते ही 7 बार याद करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं निर्भय हूँ और 21 दिन तक इसी स्वमान से राजयोग का अभ्यास करें। इससे आपका भय समाप्त हो जाएगा। बहुत ज़्यादा सोचने की आदत भी आजकल बढ़ती जा रही है, परन्तु याद रखना है कि बहुत ज़्यादा सोचने से मन की बहुत ज़्यादा शक्तियां नष्ट होती हैं और सेंसिटिव मन वातावरण की सभी निगेटिव एनर्जी को ग्रहण करने लगता है। इससे अनेक कठिनाइयां पैदा हो जाती हैं। इसके लिए आप दो बातों पर ध्यान दें। एक अव्यक्त मुरली का अध्ययन रोज़ करें और कोई भी एक स्वमान लेकर सारा दिन उसका अभ्यास करते रहें।

अपने परिवार के सभी विघ्नों को नष्ट करने के लिए 21 दिन की विघ्न विनाशक भट्ठी करें। दो स्वमान याद करके कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और विघ्न विनाशक हूँ, फिर एक घण्टा शक्तिशाली योग करें। ऐसा 21 दिन तक करें। यदि आपका योग पावरफुल होगा तो सभी विघ्न नष्ट हो जाएंगे।

**प्रश्न : मैं 12वीं की विद्यार्थी हूँ। मैं सभी सब्जेक्ट में अच्छी हूँ। बस गणित में थोड़ा कमज़ोर हूँ। मेरी केमिस्ट्री बहुत अच्छी है परंतु परीक्षा के समय मैं सबकुछ भूल जाती हूँ। मैं क्या करूँ?**

**उत्तर :** आप सवेरे या शाम कभी भी आधा घण्टा राजयोग मेडिटेशन करें और सवेरे उठकर 5 बार याद करें कि मैं बुद्धिमान हूँ और गणित में बहुत होशियार हूँ। मैं गणित को पूरी तरह एन्जॉय करती हूँ। ऐसा करने से आपका अंतर्मन आपकी इस समस्या को समाप्त कर देगा। रोज़ 2 बार यह अभ्यास करना कि मैं आत्मा स्वराज्याधिकारी हूँ। मन-बुद्धि की मालिक हूँ फिर अपनी बुद्धि से बात करना कि हे मेरी बुद्धि जो कुछ भी याद करूँ तो उसे परीक्षा के समय इमर्ज कर देना और परीक्षा के समय भी यह याद करके कि मैं स्वराज्य अधिकारी हूँ, अपनी बुद्धि से बात करना कि हे मेरी बुद्धि, जो कुछ मैंने याद किया है, सबको इमर्ज करा दे। बस आपको सबकुछ याद आ जाएगा। आपकी समस्या समाप्त हो जायेगी।

**प्रश्न : मेरा नाम भावना है। मैं पुणे से हूँ। मैंने अपनी सगी बहन को बहुत सारे पैसे उधार दिए हैं। दो वर्ष हो गए हैं वो मेरे पैसे नहीं लौटा रही है। तारीख पे तारीख दिए जा रही है। इससे मेरी टेंशन बढ़ गयी है। रात को नींद नहीं आती। मैं उससे अपने पैसे कैसे प्राप्त करूँ?**

**उत्तर :** आपकी समस्या तो निश्चित रूप से चिंता देने वाली है, परंतु अपनों को भी समय पर मदद करना ही पड़ता है लेकिन कलयुग की ये रीति-नीति ही हो गयी है कि लोग पैसे लेकर देते नहीं। इस कारण से भी किसी को मदद करने की भी इच्छा नहीं होती।

आप सवेरे उठकर 7 बार याद करना मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और अपनी बहन को आत्मा के रूप में देखकर ये संकल्प करना कि ये आत्मा बहुत भाग्यवान और धनवान है, फिर वीज़न बनायें कि वो एक मास में मेरा पैसा देने आ गयी है। साथ ही इस समस्या को हल करने के लिए किसी भी टाइम आधा घंटा योग भी कर लें।

अपने मन को थोड़ा हल्का भी रखें क्योंकि पैसे से ज़्यादा महत्वपूर्ण आपका जीवन और नींद है। चिंता करने से तो जीवन का सुख नष्ट हो जाता है। आप विश्वास रखें कि आपके पैसे जल्दी ही आपके हाथ में आ जाएंगे।

**प्रश्न : मुझे ये बताइये कि सतयुग आने वाला है और मैंने सुना है कि वहाँ सोने के ही महल होंगे तो वहाँ इतना सोना आएगा कहाँ से?**

**उत्तर :** ये तो भगवानुवाच है कि सतयुग में भारत सोने की चिड़िया होगा। सब धन-धान्य से परिपूर्ण होंगे। सोने और हीरों के महल होंगे। प्रकृति का अतुलनीय सौंदर्य होगा, परंतु आपका यह प्रश्न स्वाभाविक है कि इतना सोना आएगा कहाँ से?

सतयुग का अथाह सोना और हीरे धरती के गर्भ में समाए हुए हैं। विनाशकाल में प्राकृतिक प्रकोप बहुत होंगे। नीचे की सभी धन संपदा ऊपर आ जाएगी और भारत भूमि स्वर्ण से भरपूर हो जाएगी। सागर के तले में जो रत्न हैं, वो भी भारत की भूमि पर आ जाएंगे, क्योंकि सागर में भी बहुत सारे परिवर्तन होंगे। उसके अतिरिक्त आकाश में भी हीरों के उल्का पिण्ड घूम रहे हैं, वो भी भारत की भूमि में आ गिरेंगे और भारत धन-धान्य से भरपूर होगा और आप भी अपना सोने का महल बना लेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com


मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल